पुस्तक मेले के पहले रविवार को कविताओं और गजलों ने जमाया रंग

नई दिल्ली, 8 दिसम्बर (नवोदय टाइम्स): राजधानी के साहित्य अकादेमी में चल रहे पुस्तक मेले के तीसरे दिन कवयित्रियों और गजलकारों के नाम रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नगाड़ा वादन एवं ओडिसी नृत्य की प्रस्तुतियां हुईं। अन्य प्रकाशकों द्वारा भी अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। मेले में भारी संख्या थी। 'अस्मिता' नाम से आयोजित कवयित्री सम्मिलन प्रख्यात उडीया लेखिका यशोधारा मिश्र की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें अंजु रंजन (हिंदी), मालविका जोशी (हिंदी), नीलांचली सिंह (हिंदी), सरोजिनी बेसरा (संताली) एवं ए. साथिया सारदामणि (तमिल) ने अपनी-अपनी भाषाओं में एवं अनुवाद सहित कविताओं का पाठ किया। गजल संध्या कार्यक्रम ज्ञानप्रकाश विवेक की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें हरेराम समीप, कमलेश भट्ट कमल, सविता चड्ढा और विज्ञान व्रत ने गजलों का पाठ किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में ज्ञानप्रकाश विवेक ने कहा कि वर्तमान हिंदी गजल में आधुनिकता बोध अपनी सबसे ऊँचाई पर है जो उसकी बहुत बड़ी उपलब्धि है। उनका एक शेर जो खूब पसंद किया गया वह था 'दस्तकें दर पर बहुत देर तलक दी उसने, काश एक बार नाम मेरा पुकारा होता। विज्ञान व्रत की पंक्तियां थीं 'एक सच है मौत भी, वह सिकंदर है तो है'। हरेराम समीप ने अद्भुत संवेदना से भरी गजले सुनाईं। कमलेश भट्ट कमल की पंक्तियां थी 'सलीका जिंदगी जीने का आता ही नहीं तुमको, कि सुख भी हैं कई इन कष्टों की दुनिया में'। सविता चड्ढा की पंक्तियां थीं 'दुनिया लाख बुरी हो लेकिन, हमें यहीं रहना होता है'।